Ans. भूगोल में क्षेत्रीय विभेदीकरण का उल्लेख छठी शताब्दी में मिलेटस के हिकेटियस ने प्रस्तुत किया। आठवीं से अठारवीं सदी के बीच स्ट्रेबो ने इसे भू-विस्तार विज्ञान (Chorology) की संज्ञा दी। वह क्षेत्रों के वर्णन को भूगोल का सार-उद्देश्य भूगोल का मर्म अथवा हृदय कहता था। इसके उपरांत हार्टशोर्न की रचना The Nature of Geography (1939) में धरातल पर मानव एवं प्राकृतिक दृश्य-वस्तुओं अथवा घटनाओं में क्षेत्रीय विभेदीकरण और विशिष्टीकरण (Areal Differentiation) को इंगित किया गया।

वह भौगोलिक क्षेत्र जिसमें व्याप्त अनूठापन अथवा विशिष्टता उसे दूसरे क्षेत्र से भिन्न व्यक्तित्व प्रदान करें क्षेत्रीय विभेदीकरण अथवा विशिष्टीकरण (Areal Differention) कहा जाता है। इसे क्षेत्र-वर्णणी भूगोल (Chorography) अथवा प्रदेश-विज्ञान (Chorology) भी कहीं जाता। धरातल पर विस्तृत भिन्न-२ क्षेत्रों का अनूठा चरित्र अध्ययन भूगोल के अध्ययन का विषय है। जिस कारण इसे विशिष्ट-वर्णणी (Idiographic as it concerned with the unique and particular) भी कहा गया है।

मानव भूगोल में 1980 के दशाब्दी में क्षेत्र विभेदीकरण के तीन स्वरूप प्रकट हुए थे -

(क) मानवतावादी सोच (Humanistic concept) =>

मानवीय बोध या जानकारी इसका उद्देश्य होता है। इसकी पद्धति भूदृश्य का चित्रात्मक बोध कराने पर आधारित तकनीक (Iconographic Technique) होती है। इसमें क्षेत्र के भूदृश्य-वस्तुओं को लाक्षणिक संकेतों द्वारा ज्ञात किया जाता है। इससे क्षेत्र की सामाजिक व ऐतिहासिक विशिष्टता का ज्ञान होता है।

(ख) क्षेत्र में बदले हुए श्रम-विभाजन सम्बन्धी विश्लेषण =>

भूगोल के जानकारों का मन्तव्य क्षेत्र में आर्थिक क्रियाओं व जन-कल्याण के कार्यों का विवेचन मार्क्सवादी दृष्टिकोण से किया जाने लगा।

(ग) प्रासंगिक सिद्धान्त (Contexual theory) =>

क्षेत्रों में विभिन्नता और समानता को मानवीय एवं सामाजिक संरचना के माध्यम से विभेद द्वारा देखना था। प्रत्येक क्षेत्र की सामाजिक संरचना अनूठी होती है जिससे वह दूसरे

अलग होती है।

गुण → (i) भूगोल में विभेदीकरण के आने से इस विषय की परिभाषा अत्यन्त तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक, यथार्थ पर आधारित मानी जाती है,
(ii) अध्ययन में सुगमता
(iii) क्षेत्रों की विशेषता ~~या समस्त~~ का गहन अध्ययन करने में सहायक,

दोष →
क्षेत्रीय विभेदीकरण में उनके मध्य स्पष्ट सीमा रेखा निर्धारित करना बड़ी चुनौती भरा कार्य है क्योंकि सामाजिक समुदायों में आर्थिक सांस्कृतिक व नैतिक बदलाव बहुत तेजी से घटित होते रहते है
(ii) इनका स्वरूप संक्षिप्त व अस्थायी है। अतः स्थानिक इकाईयाँ अस्थायी रूप से ही निर्धारित बनी है।
(iii) क्षेत्रीय विभेदीकरण का अध्ययन प्रभावी व स्थायी सामान्यीकरण अथवा निष्कर्ष की ओर नहीं ले जाता है, इसका वर्णन मात्र अनूठा और अस्थायी है जो सामान्य नियम - निर्धारण में योग नहीं दे सकता। इसलिए प्रादेशिक अध्ययन में अनूठी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए भी इस तत्व पर जोर देना चाहिए कि कोई भी प्रदेश पूर्णरूपेण पूर्णरूप से अलग एवं स्वतंत्र है। वास्तव में कोई प्रदेश चारों ओर के प्रदेशों के प्रभावों का परिणाम होता है।

आलोचना का अर्थ यह नहीं कि क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना निरर्थक है। भूगोल में विभेदीकरण द्वारा विषय की परिभाषा अत्यन्त तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक और यथार्थ पर आधारित मानी जाती है।